W - 09

हिन्दी उपन्यास के विकास का तृतीय चरण

स्नातक - द्वितीय वर्ष
नाम - डॉ० अंजु
वैशाली महिला महाविद्यालय

तृतीय चरण: प्रेमचंद उत्तर युग (1936 - 1960)

प्रेमचंद के बाद कथा साहित्य में दृष्टिकोण विषय आदि में कई प्रकार के परिवर्तन दिखाई पड़े। यह परिवर्तन जैनेन्द्र कुमार, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय यशपाल आदि के उपन्यासों में इतना प्रबल हो गये कि धारा ही बदल गई। इन उपन्यासों पर फ्रायड का गहरा प्रभाव है। जैनेन्द्र 'परख' सुनीता; कल्याणी त्यागपत्र उपन्यासों के कारण इलाचंद्र जोशी - सन्यासी, पर्दे की रानी; जहाज का पंछी, मुक्तिपथ; उपन्यासों के कारण, अज्ञेय - नदी के द्वीप शेखर की जीवनी; अपने अपने अजनबी के कारण तथा यशपाल, दिव्या

अमिता, देशद्रोही के कारण उपन्यास साहित्य में अमर है। इस युग के उपन्यासकारों में वृंदावनलाल वर्मा, भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर, प्रतापनारायण श्रीवास्तव, निराला, भगवती प्रसाद वाजपेयी तथा हजारी प्रसाद द्विवेदी मुख्य है।

जैनेन्द्र

जैनेन्द्र कुमार प्रेमचंद के बाद हिन्दी के दूसरे सबसे बड़े उपन्यासकार है। विषय-वस्तु, शैली, प्रवृत्ति, भाषा आदि दृष्टियों से भिन्न आपका क्षेत्र प्रेमचंद से और मौलिक है। जैनेन्द्र ने ग्रामों को छोड़कर नगर की गलियों तथा शिक्षित मध्य वर्गीय परिवारों के बीच की मनोवैज्ञानिक समस्याओं, कुंठाओं, असंतोष आदि को उपन्यासों का विषय बनाया है। आपने पुरुष और नारी प्रेम का जीवन की आधारभूत आवश्यकता माना है। परख की की 'तपोभूमि' की 'धरती' 'सुनीता' की सुनीता, कल्याणी की कल्याणी, त्यागपत्र की मृणाल के हृदय में एक ऐसी ज्वाला जलती रहती है जो दूसरो को निरंतर शांत रखने का प्रयास करती। इन पात्रों के आत्म-

छाया रहता है।
पास एक रहस्य की छाया रहता है।
संपूर्ण उपन्यास पढ़ लेने पर भी लगता है अभी कुछ शेष रह गया है। परंपरागत सदाचार की कसौटी पर कसना इनके उपन्यास के लिए न्याय नहीं है।

इलाचंद्र जोशी
फ्रायड, युंग तथा एडलर के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतो को कथा क्षेत्र में आरोपित करने वाले उपन्यास हैं। 'सन्यासी' इनका सर्वोत्तम उपन्यास है। यह एक ऐसे व्यक्ति की आत्मकथा है जिसने क्रमशः ~~स्त्रि~~ स्त्रियों से प्रेम किया परंतु संवेदनशीलता और अहंकार के कारण किसी को सुखी नहीं कर सका। प्रेम और छाया का हीन भावना से ग्रस्त नायक पिता द्वारा यह बताने पर कि वह उनका अवैध पुत्र है, विक्षिप्त होकर अनेक स्त्रियों के सतीत्व भंग करता है। ~~बाद~~ बाद में जब उसे ज्ञात होता है कि उसकी माँ साध्वी ~~है~~ थी, एक वेश्या से विवाह कर गृहस्थ जीवन बीताता है। मुक्तिपथ का अंत राजीव देश उद्धार में लगा आदर्श नायक है।